राजस्थान सिविल सेवा अपील अधिकरण, जयपुर

अपील संख्या :– 393/2023

बनिता देवी –अपीलार्थी

बनाम

1. शासन सचिव, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग,राजस्थान, जयपुर।
2. निदेशक (अराजपत्रित) चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं, एवं अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन) पंचायती राज (चिकित्सा) विभाग, राजस्थान, जयपुर।
3. खण्ड मुख्य चिकित्सा अधिकारी, उदयपुरवाटी, झुंझूनूं।

–प्रत्यर्थीगण

प्रस्तुतिकरण की दिनांक : 18.01.2023
आदेश की दिनांक : 06.02.2023

उपस्थित –
अपीलार्थी की ओर से : श्री सुरेन्द्र सिंह, अभिभाषक

समक्षः– अनन्त भंडारी, सदस्य (न्यायिक)
चेतन राम देवड़ा, सदस्य

आदेश

मामले की आवश्यक प्रकृति को देखते हुए राजस्थान सिविल सेवा (सेवा मामलों के लिए अपीलीय अधिकरण) अधिनियम–1976 की धारा–4ए के उपबन्ध में शिथिलता प्रदान करने की प्रार्थना स्वीकार कर अपील पर सुनवाई की गई।

इस अपील में अपीलार्थी के विद्वान अधिवक्ता ने निवेदन किया है कि अपीलार्थी का स्थानांतरण आलोच्य आदेश दिनांक 12.01.2023 (अनुलग्नक–1) को चुनौती दी है जिसमें अपीलार्थी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भोंत, ग्राम पंचायत फतेहपुर (रूपवास) भरतपुर में वरिष्ठ अध्यापक (विज्ञान) के पद पर कार्यरत है। अपीलार्थी वर्तमान पदस्थापित स्थान पर वर्ष 2016 से कार्यरत है। प्रत्यर्थी विभाग के आलोच्य आदेश दिनांक 12.01.2023 (अनुलग्नक–1) के द्वारा अपीलार्थी का स्थानान्तरण राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भोंत, ग्राम पंचायत फतेहपुर (रूपवास) भरतपुर से राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सुनहेरा, भरतपुर किया गया तथा निजी प्रत्यर्थी संख्या–4 का स्थानान्तरण अपीलार्थी के स्थान पर समंजित (Accommodate) करने के आशय से किया गया। उक्त आदेश की पालना में अपीलार्थी को दिनांक 17.01.2023 (अनुलग्नक–2) द्वारा कार्यमुक्त कर दिया गया। अपीलार्थी को स्थानान्तरण पर यात्रा भत्ता एवं योगकाल देय किया गया है, जबकि निजी प्रत्यर्थी संख्या–4 को स्थानान्तरण पर यात्रा भत्ता एवं योगकाल देय नहीं किया गया है, जिससे स्पष्ट होता है कि निजी प्रत्यर्थी संख्या–4 का स्थानान्तरण स्वयं की प्रार्थना पर किया गया है। अपीलार्थी की सास लकवे की बीमारी से ग्रसित है (अनुलग्नक–3)।

हमने विद्वान् अधिवक्ता की बहस सुनी एवं पत्रावली का अवलोकन किया। यह नियोक्ता के विवेक पर निर्भर करता है कि अपने कर्मचारियों की सेवा किस स्थान पर ले। वर्तमान में यह प्रकट नहीं होता है कि निजी प्रत्यर्थी संख्या 4 को समंजन करने की दृष्टि से अपीलार्थी का स्थानान्तरण किया गया हो, साथ ही इसमें कोई दुर्भावना परिलक्षित नहीं होती है। अपीलार्थी को वर्तमान स्थान पर यथोचित समय पदस्थापन रहने पश्चात आलोच्य आदेश द्वारा स्थानान्तरण किया गया। माननीय उच्चतम न्यायालय ने **शिल्पी बोस बनाम बिहार राज्य (ए.आई.आर. 1991 एस.सी. 532**) के प्रकरण में राजकीय कार्मिकों के स्थानान्तरण के विषय में निम्न प्रकार अवधारित किया है :–

> *"In our opinion, the Courts should not interfere with transfer orders which are made in public interest and for administrative reasons unless the transfer orders are made in violation of any mandatory statutory rule or on the ground of malafide. A Government servant holding a transferable post has no vested right to remain posted at one place or the other, he is liable to be transferred from one place to the other. Transfer orders issued by the competent authority do not violate any of his legal rights."*

सेवाविधि का सुस्थापित सिद्धान्त है कि स्थानान्तरण सेवा का एक अभिन्न तत्व होता है। स्थानान्तरण करना नियोक्ता का अधिकार है और अपीलार्थी का स्थानान्तरण सक्षम प्राधिकारी द्वारा किया गया है, इस कारण स्थानान्तरण आदेश में हस्तक्षेप करना उचित नहीं है।

अपीलार्थी ने अपील में स्वंय का दूरस्थ स्थानान्तरण किए जाने का अभिकथन भी किया है। जबकि आलोच्य आदेश द्वारा उसी जिले में स्थानान्तरण किया गया। इस सम्बन्ध में माननीय राजस्थान उच्च न्यायालय ने **भगवानदास मित्तल एवं अन्य बनाम राजस्थान राज्य डब्ल्यू.एल.सी. 2007(2) 276** में निम्न प्रकार अवधारित किया है :–

> *"So far as plea that the transfer has been made to a far away place, it cannot be interfered with for the reason that the employee has to work in the State wherever he/she is posted. The plea of posting at a distance from one place to another is immaterial. It does not involve any violation of service Rule."*

अतः इस आधार पर आलोच्य स्थानान्तरण आदेश में हस्तक्षेप किया जाना उचित नहीं है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर अपीलार्थी की अपील बलहीन एवं सारहीन होने के कारण मय स्थगन प्रार्थना पत्र के खारिज की जाती है।

आदेश आज दिनांक 06.02.2023 को हमारे द्वारा लिखाया जाकर मुद्रांकित एवं हस्ताक्षरित कर उद्घोषित किया गया।

(चेतन राम देवड़ा)
सदस्य

(अनन्त भंडारी)
सदस्य (न्यायिक)